चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 5.11.2020 पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....1-4.....

आह्वान

तीन विश्वविद्यालयों के कुलपतियों और खेल अधिकारी ने दिवाली पर पटाखे न जलाने की अपील की

पटाखे इंसान व पशु-पक्षियों के लिए घातक

हिसार। पटाखों के कारण कई तरह की खतरनाक गैस वायुमंडल में मिल जाती हैं। वायु प्रदूषण को और भी घातक बनाती हैं। इससे सीधे तौर पर पर्यावरण को नुकसान होता है। यह प्रदूषण इंसानों के साथ ही पशु-पक्षियों के लिए भी घातक सिद्ध होता है। गुजवि, एचएयू, लुवास के कुलपतियों और जिला खेल अधिकारी ने लोगों से अपील की है कि पटाखों के कारण ही त्योहारों के आसपास पक्षी जगत को अधिक नुकसान होता है। ऐसे में बच्चे या बड़े पटाखे न जलाकर दीयों के साथ दिवाली मनाएं। आज वायु प्रदूषण को कम करने के लिए उपाय ढूंढने की जरूरत है। ऐसे समय में हम पटाखे जलाएंगे तो यह वायु प्रदूषण को कम करने के प्रयासों को भी धक्का पहुंचाएगा। इस बारे में अमर उजाला ने एक युद्ध-पटाखों के विरुद्ध अभियान के तहत बुद्धिजीवी वर्ग से बात की, उन्होंने आमजन खासकर युवाओं से अपील की कि सभी पटाखों रहित दिवाली मनाएं। ब्यूरो/संवाद

अपना संकल्प hisarbureau@roh.amarujala.com पर फोटो के साथ मेल कीजिए। साथ में अपना नाम, पता, मोबाइल नंबर और फोटो भी अवश्य भेजें। आपके संकल्प अगले दिन फोटो के साथ प्रकाशित किए जाएंगे।

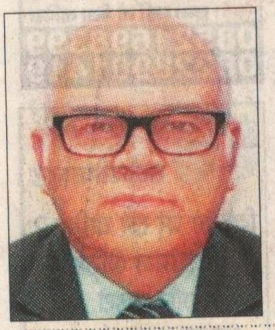

वायु प्रदूषण लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में इसे बढ़ाने की बजाय कम करने के उपाय होने चाहिए। बच्चे और युवा पटाखे न जलाएं तो अच्छा है। बढ़ता वायु प्रदूषण लोगों में कई तरह की बीमारियां पैदा कर रहा है। पटाखों से निकलने वाली गैस के कारण वायु प्रदूषण का प्रभाव और भी घातक होता है। दूसरा, पटाखे न जलाने के साथ यह भी आह्वान करना चाहता हूं कि आप दिवाली पर जो भी चीज खरीदें, बेहतर होगा कि वह भारत की बनी चीज ही खरीदें। - **प्रो. टंकेश्वर कुमार, कुलपति, गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय।**

०दिवाली को दीपों और रोशनी का त्योहार कहा गया है। इस त्योहार की खुशी पटाखे जलाकर मनाते हैं, लेकिन अब जलवायु परिवर्तन और लगातार बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण पहले ही लोगों का सांस लेना दूभर हो गया है। ऐसे में मैं सभी से आह्वान करता हूं कि बच्चे या बड़े पटाखे जलाने से बचें। यह हम सबके स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए सबसे जरूरी है। कोरोना संकट के बीच हमें वायु प्रदूषण को कम करने की जरूरत है। - **प्रो. समर सिंह, कुलपति, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार।**

०दिवाली दीयों से मनाई जाए तो बेहतर है। वायु प्रदूषण पहले ही लोगों के लिए आफत बना हुआ है। सिर्फ इंसान ही क्यों पशु-पक्षियों पर भी वायु प्रदूषण और पटाखों के शोर के बुरे असर देखने को मिल रहे हैं। ऐसे में पूरी जीव जाति के कल्याण के लिए यह जरूरी है कि हम पटाखों रहित दिवाली मनाएं। दीये जलाएं, घर पर बनी मिठाइयां खाएं और स्वस्थ रहें।

- डॉ. गुरदियाल सिंह, कुलपति, लाला लाजपत राय पशु विज्ञान एवं पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय हिसार।

०पटाखों से निकलने वाली गैस काफी जहरीली होती हैं, जोकि हमारे स्वास्थ्य के लिए सबसे ज्यादा हानिकारक हैं। पटाखों से निकलने वाला धुआं सांस के रोगियों के लिए खतरनाक होता है। उन्हें एलर्जी तक भी हो सकती है, इसलिए दिवाली पर पटाखे जलाने की बजाय देसी घी के दीये जलाएं। इससे वातावरण भी शुद्ध होगा और कोई हानि भी नहीं होगी। मैं लोगों से अपील करता हूं कि दिवाली पर पटाखे न जलाएं। - **कृष्ण कुमार ढांडा, जिला खेल अधिकारी।**

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ......पंजाब केसरी......

दिनांक ...5.11.2020... पृष्ठ संख्या ...2... कॉलम ...1-3...

किसान पराली को जलाने की बजाए उसे अतिरिक्त आय अर्जित करने का जरिया बनाएं : डॉ. नरेंद्र

फसल अवशेष प्रबंधन पर किसानों को किया जागरूक

किसानों को पराली न जलाने के लिए जागरूक करते डॉ. नरेंद्र कुमार। (भारद्वाज)

मंडी आदमपुर, 4 नवम्बर (भारद्वाज): कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर द्वारा गांव साहू व गांव चमार खेड़ा में धान की पराली प्रबंधन पर जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केंद्र के कोऑर्डिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने बताया कि पराली जलाने पर वायु प्रदूषण के अलावा मिट्टी के पोषक तत्व भी नष्ट हो जाते हैं। धुएं से पर्यावरण में जहरीली गैस घुल जाती है जो स्मॉग का कारण बनती है और साथ ही लोगों की श्वसन संबंधी परेशानियों का कारण भी। इसके अलावा इससे आग फैलने व अन्य खेतों या संपत्ति को नुक्सान पहुंचने की संभावना भी बनी रहती है और साथ ही मिट्टी में मौजूद फायदेमंद जीवाणु व केंचुआ भी मर जाते हैं, जिससे मिट्टी में प्राकृतिक तौर से नाइट्रोजन वह हवा नहीं पहुंच पाते। उन्होंने बताया कि धुएं के कारण फैली धुंध एक ओर जहां कई दुर्घटनाओं का कारण बनती है वहीं बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक के लिए सांस लेने में तकलीफ का कारण बनती है।

अजीत सांगवान ने बताया कि पराली के समुचित प्रबंधन के लिए आजकल बहुत सारे विकल्प विद्यमान है जिनमें से मुख्य रूप से स्ट्रा रीपर, हैप्पी सीडर, जीरो ड्रिल मशीन, मल्चर व चॉपर मशीन है। इनका प्रयोग करके किसान अतिरिक्त धन कमा सकते हैं। ऐसी मशीनें फसल अवशेषों को बड़े-बड़े बंडलों में बदल सकती हैं, जिसके बाद इन्हें विद्युत उत्पादन के लिए थर्मल प्लांटों को बेचकर आमदनी की जा सकती है। उन्होंने बताया कि पराली से तैयार ईंधन के इस्तेमाल से एक ओर जहां लकड़ी तथा कोयले जैसे ईंधन की बचत होती है, वहीं पशुओं के चारे के रूप में इस्तेमाल किए जाने के साथ ही प्लेट और फर्नीचर के लिए बोर्ड भी बनाए जाते हैं।

डॉ. सत्यवीर कुंडु ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी है। उन्होंने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....अमर उजाला....

दिनांक ..5.11.2020.. पृष्ठ संख्या....2.... कॉलम....5....

पराली से अतिरिक्त आय अर्जित करें : डॉ. नरेंद्र

मंडी आदमपुर। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर द्वारा गांव साहू व गांव चमारखेड़ा में धान की पराली प्रबंधन पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केंद्र के कोऑर्डिनेटर डॉ. नरेंद्र कुमार ने बताया कि पराली जलाने पर वायु प्रदूषण के अलावा मिट्टी के पोषक तत्व भी नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि पराली जलाने की बजाए किसान उससे अतिरिक्त आय अर्जित करें। अजीत सांगवान ने बताया कि पराली के समुचित प्रबंधन के लिए आजकल बहुत सारे विकल्प विद्यमान हैं। जिनमें से मुख्य रूप से स्ट्रा रीपर, हैप्पी सीडर, जीरो ड्रिल मशीन, श्रेडर, मल्चर व चॉपर मशीन हैं। इन मशीनों का प्रयोग करके किसान आय का अतिरिक्त जरिया और अतिरिक्त धन कमा सकते हैं। उन्होंने बताया कि पराली से तैयार ईंधन के इस्तेमाल से एक ओर जहां लकड़ी तथा कोयले जैसे ईंधन की बचत होती है, वहीं पशुओं के चारे के रूप में इस्तेमाल किए जाने के साथ ही प्लेट और फर्नीचर के लिए बोर्ड भी बनाए जाते हैं। डॉ. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी है। संवाद

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक जागरण........

दिनांक ...5.11.2020.....पृष्ठ संख्या.......1..........कॉलम.........2-6......

अनुमान 10.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया रात्रि तापमान, रात को बढ़ रही ठंड, हल्की ओस भी गिरने लगी

9 तक मौसम परिवर्तनशील, तापमान में होगी गिरावट

जागरण संवाददाता, हिसार : हिसार के रात्रि तापमान में बुधवार को बढ़ोतरी दर्ज की गई। तापमान सामान्य से छह डिग्री कम रह 10.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है। वहीं अधिकतम तापमान सामान्य से एक डिग्री कम रहकर 30.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है। मौसम विज्ञानियों की मानें तो रात के समय सर्दी अधिक पड़ रही है। इसके साथ ही हल्की ओस भी गिरने लगी है। आने वाले दिनों में तापमान में अच्छी खासी गिरावट देखने को मिल सकती है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. मदन खीचड़ ने बताया कि मौसम आमतौर पर 9 नवंबर तक परिवर्तनशील रहने की संभावना है।

प्रदूषण का आलम यह है कि बुधवार सुबह करीब आठ बजे सूरज निकलने के बावजूद धूप नहीं खिली। आसमान में स्मॉग की पतली चादर ने सूरज की किरणों का रास्ता भी रोक दिया। रेलवे स्टेशन पर ऐसा लग रहा था जैसे धुंध छा गई हो। ● प्रवीण सोनी

2 दिन पहले कम हुआ था वायु प्रदूषण, फिर से बढ़ गया

500 माइक्रो ग्राम तक पहुंचा पीएम 2.5

हिसार में 370 माइक्रो ग्राम प्रति घन मीटर दर्ज किया एक्यूआइ

हिसार में औसत एयर क्वालिटी इंडेक्स 370 माइक्रो ग्राम प्रतिघन मीटर तक पहुंच गया है। जिसमें पीएम 2.5, सर्वाधिक 500 तो पीएम 10 474 माइक्रो ग्राम प्रति घन मीटर तक बुधवार को पहुंच गया है। पिछले दो दिनों में प्रदूषण कम हुआ था, मगर वायु प्रदूषण में फिर पीएम 2.5 व पीएम 10 की मात्रा बढ़ने से हवा काफी प्रदूषित हो गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 4.11.2020.....पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....1-2.....

'मिट्टी-पानी की जांच करवाएं किसान'

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में 'मिट्टी व पानी की जांच' विषय पर चल रहा तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम मंगलवार को संपन्न हो गया। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा की देखरेख व मार्गदर्शन में किया गया। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. सुरेंद्र सिंह ने कहा कि किसान फलदार पौधों के बाग तो लगा लेते हैं, लेकिन जानकारी के अभाव के चलते बाग से उचित उत्पादन नहीं ले पाते। इसलिए किसानों को बाग लगाने से पहले मिट्टी-पानी की जांच अवश्य करवानी चाहिए। इस मौके पर डॉ. अशोक गोदारा, डॉ. ऊषा वशिष्ठ, डॉ. रोहताश, डॉ. डीके शर्मा ने भी संबोधन दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....अमर उजाला........

दिनांक ...4.11.2020... पृष्ठ संख्या ...4... कॉलम ...8...

प्रवेश परीक्षाओं का परिणाम 9 को जारी करेगा हकृवि

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स और बीएससी एग्रीकल्चर के छह वर्षीय व होम साइंस के चार वर्षीय कोर्स की 24 व 31 अक्तूबर को आयोजित प्रवेश परीक्षाओं के परिणाम 9 नवंबर को जारी किए जाएंगे।

कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज ने बताया कि 24 अक्तूबर को बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए प्रवेश परीक्षाओं का आयोजन किया गया था। इसी प्रकार बीएससी एग्रीकल्चर के छह वर्षीय व होम साइंस के चार वर्षीय कोर्स के लिए 31 अक्तूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की गई थी। 9 नवंबर को इनके परीक्षा परिणाम घोषित करने के साथ ही प्रवेश प्रक्रिया शुरू होगी। ब्यूरो